Name Of The Scholar	Haider Ali
Name Of Supervisor	Prof. Asghar Wajahat
Department	Hindi
Title of thesis	Hindi-Urdu ke Upanyasonmein Sudharwadi Chetana ka Tulnatmak Adhyayan (1869-1905)

ABSTRACT

उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में भारत में धार्मिक एवं सांस्कृतिक आंदोलनों के कारण एक नई प्रकार की चेतना का विकास हो रहा था। धार्मिक पाखंड एवं अंधविश्वासों के प्रति लोगों की धारणा बदल रही थी। धार्मिक–सांस्कृतिक जड़ता को तोड़ने के प्रयास उपन्यासों में दिखाई पड़ते है। तत्कालीन उपन्यासकारों ने कुप्रथाओं और रूढ़िवादी विचारधारा का विरोध किया था। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी समाज पर पड़ रहा था। पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति से प्रभावित लोग आधुनिक जीवन शैली का वहन तो करना चाहते थे। परंतु वे अपनी संस्कृति को नहीं छोडना चाहते थे। ऐसे में सांस्कृतिक अर्न्तद्वंद्व की स्थिति बनी हुई थी। तत्कालीन हिंदी–उर्दू उपन्यासों में यह बात समान दिखाई पड़ती है। लेखक एक ओर तो पाश्चिमी शिक्षा और आधुनिक तकनीक का समर्थन करते हैं, वहीं दूसरी ओर वे पाश्चात्य शैली पर व्यंग्य करते हैं, बल्कि विरोध भी करते हैं। 'मिरातुल उरूस' में असगरी अंग्रेज़ों द्वारा ज्ञान प्रचार की नीति और आधुनिक तकनीक को भारतीयों के लिए सुख–सुविधा की वस्तु मानती है। अंग्रेज़ी सभ्यता ने भारत में एक सांस्कृतिक संकट की स्थिति पैदा कर दी थी। अंग्रेज़ी को सरकारी कामकाज और शिक्षा का माध्यम बनाकर उन्होंने उसे एक प्रकार से जनता पर थोपा था। अंग्रेज़ी शिक्षा के कारण पश्चिमी ज्ञान व संस्कृति का प्रवेश भारतीय समाज में आसानी से हो गया था। परंतु धीरे–धीरे बुद्धिजीवी वर्ग को यह अनुभव होने लगा

था कि देश की उन्नति के लिए अपनी भाषा की उन्नति आवश्यक है। दूसरी ओर प्रबुद्ध वर्ग यह विचार कर रहा था कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को जानने के लिए अंग्रेज़ी भाषा आवश्यक है। यह द्वंद्व उर्दू-हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में व्यक्त हुआ है। ये कथाकार पश्चिमी संस्कृति का समर्थन भी करते हैं और विरोध भी। इसी प्रकार ये उपन्यासकार यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान, व्यापार के तरीकों, उनके अनुकरण पर कल-कारखानों की स्थापना आदि का तो समर्थन करते हैं, पर उनके रहन-सहन, वेशभूषा, तौर तरीकों, फैशन आदि की नकल का विरोध भी करते हैं। तत्कालीन समाज की इस मनोदशा का चित्रण इन उपन्यासों में आया है।

कहने का तात्पर्य है कि तत्कालीन हिंदी-उर्दू उपन्यासों की समस्याएं समान थीं। हिंदू समाज में सती प्रथा धर्म के अंग के रूप में थी किन्तु मुस्लिम समाज में नहीं। इसी प्रकार छूआछूत हिंदू समाज की मुख्य समस्या थी। यह समाज को बांटने वाली बड़ी समस्या थी। मुस्लिम समाज में जाति व धर्म के नाम पर इस प्रकार की समस्या नहीं थी। परन्तु भारतीय मुस्लिम समाज भी जात-पात की समस्या से पूरी तरह अछूता नहीं था। अतः उर्दू उपन्यासों में सती प्रथा, छूआछूत समस्या आदि वर्णन समस्या के रूप में सामने नहीं आता परन्तु हिंदी उपन्यासों में यहा बड़ा मुद्दा बनकर सामने आता है। अशिक्षा, नयी व्यवस्था से साक्षात्कार, प्राचीन संस्कृति से मोह के कारण सांस्कृतिक अन्तर्द्वंद्व, जड़ परंपरा एवं अंधविश्वासों का विरोध, स्त्री शिक्षा एवं उनसे संबंधित समस्याओं का चित्रण आदि तत्कालीन उपन्यासों के केन्द्र बिन्दु रहे हैं। यदि कुछ भिन्नता दिखाई पड़ती है तो वह उसके सामाजिक-धार्मिक परिवेश के कारण है। अतः तत्कालीन हिंदी-उर्दू उपन्यासों में समस्याएं एक समान है और उपन्यासकारों की मुख्य चिंता समाज सुधार है।